वक्त

काव्य संग्रह

सीमा काचोरे

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

वक्त

काव्य संग्रह

सीमा सुनील काचोरे

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-065-0"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **सीमा काचोरे**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

WAQT BY SEEMA KACHORE

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

1.	वक्त	5
2.	लिखो	6
3.	घूँघट	7
4.	वक्त(समय)	8
5.	बंधन	9
6.	वक्त नही	10
7.	सुबह	11
8.	गर्व है मुझे	12
9.	पतिदेव	13
10.	ये काश!	14
11.	वृक्ष की नियति	15
12.	एक मुलाकात भगवान के साथ	16
13.	श्राद्ध	17
14.	मन	18
15.	ब्याह के दो पहलू	19
16.	विचार	20
17.	मीठी यादे	21
18.	बड़ी हो गई है किंतनी	22
19.	मिठास	23
20.	इश्क	24
21.	शिक्षक	25
22.	ख्वाहिशें	26

23.	दीवानी	27
24.	बेटियां	28
25.	अनकही दोस्त	29
26.	सच्चा साथी	30
27.	मोल-अनमोल	31
28.	जिन्दगी	32

वक्त

वक्त का पहिया ऐसे घूमता है मानो
बड़ी जल्दी हो उसे अतीत को
पीछे छोड़ने की
जो आज है, वो कल हो जाता है
और कल कभी लौटता नही
आने वाले कल को हम
आज बनाकर जीते हैं
कभी माथे पर शिकन लेकर
कभी सुकून के साथ
हर पल एक नए पल का
इंतजार करता है....
कभी बिस्तर की सिलवटे
कभी किताबो के पुरानी बातें
कभी चेहरे पर पड़ती रेखाये
तो कभी बालो की बदलती रंगत
दिलाते है एहसास बदलते वक्त का
रिश्तों का बदलाव
कभी मिठास, तो कभी कड़वाहट
वक्त के साथ बदलते रिश्ते
कभी बनते कभी बिगड़ते रिश्ते
महसूस कराते है कि
वक्त बदल रहा है
वक्त का पहिया घूम रहा है
तेजी से.....

लिखो

मत सोचो क्या लिखना है और
क्या किसने पढ़ना है
लिखो जो आपका दिल कहे
मत सोचो कि कब लिखना है
लिखो जब दिल थाम के कलम
हाथों से तुम्हारे जिद कर कहे
लिखो! बस अभी लिखना है।
लिखो मत जो आपने पढ़ा है किताबो में
लिखो वो जो जिंदगी ने पढ़ाया आपको।
खुद को और अपनों को पढ़कर
जो नब्ज बरबस वही नज़्म लिखो
आप लिखो बस वही नज़्म लिखो
आपके दिल से लिखे लफ़्ज
किसी का दिल भी पढ़ता है
जज़्बातों की स्याही डाल
सच की नोक से कुरेद रफू करो
जहन में लोगो की सयानी बातों ने
घोले है हवा में जहर कई
आप अपनी दीवानगी के लफ़्जो से।
बख़्श दो, घुटती साँसों की साफ हवा का झोंका दो...
लिखो तो कुछ ऐसा लिखो
पढ़कर जिसे कुछ टूटे ख्वाबो को
साजे आसमान में नई परवाज मील।

घूंघट

घूंघट काश हर उलझन
हर हादसे का हल हो जाता
मर्यादा की चहु तरफा सजावटी
चौखट का मान फिर रह जाता
किंतु हुआ एकदम उलट की
घूँघट बहुओ की मर्यादा और
वही बेटियां बिन पर्दे के ही
संस्कारी सभ्य कहलाने लगी है
घूँघट क्या कही एक चहचहाती
फुदकती उड़ती चिड़ियों को
कैद करते फंदे की है पहचान
या मानसिक खोकले पन का भान
बेटियां गर बिन घूँघट सपनो में
खूबसूरत सितारे जड़ सकती है
फिर क्यू बहु के सपने घूँघट
ध्वस्त परम्परा की बलि चढ़ती है
दरअसल घूँघट कपड़े का नही
बेलगाम जुबान का होना चाहिए
शर्म हया लिहाज घूँघट से नही
अपितु आँखो जुबान में झलके
नेकनीयती शालीनता व्यवहार में
मृदु नपी तुली जुबा में खनके।

वक्त (समय)

किसी भी जरिये से कैद करू इसको।
ये वक्त जो भाग जाता है
रेत बना के यादों की
मुठ्ठी से फिसलता जाता है
पल, मिनट, घण्टे ,दिन, महीने
सालो में बदलता जाता है
दबे पांव आकर हमसे
हमको ही चुरा ले जाता है
कुछ पल तो सुहाने आते है
तो रफ्तार और बढ़ाता है।
दुःख भरे पलो से जाने क्यू
ये रिश्ता क्यों निभाता है
रखा जो मन के झरोखे में
पंछी बन उड़ जाता है
आँखो के पिंजरे मे कैद किया
तो आँसू बन कर बह जाता है
आँखो को बंद कर ले जो
ख्वाब बना मुस्काता है
सोते हम रह जाते है
वक्त निकल जाता है
बचपन से जवानी तक ये
हमको जाने कब ले जाता है।
पीछे मुड़ के देखो तो
गुजरा वक्त नजर बस आता है
चलो जो छुटा अपना बचपन
बच्चो के बचपन मे लौट के आता है।
पर घड़ी के फेर में पड़ के वो
जाने कब आता है जाता है
कभी हम उसके पीछे होते है
कभी ये हमारे पीछे होता है
रेस लगाई वक्त से जिसने
अंत मे हार ही जाता है।
जो गुजर गया सो गुजर गया
कहके हमको बहलाता है
नही समझता कि इसके संग
जीवन बिछड़ता जाता है
वक्त की इसी भाग-दौड़ में
रुखसती का दिन भी जाता है।
तब भी कहा थंबता है
जालिम बस 'दोस्त अलविदा'
कह देता है।
फिर आगे बढ़ जाता है
किस जरिये से कैद करू इसको
ये वक्त जो भाग जाता है...

बंधन

बंधे है जो बंधन में वो
रिश्तों की गांठ लगाते हैं।
व्यवहार जगत की दुनियां
में ये बन्धन टूट जाते है।
मन के धागे के बन्धन में जो
एहसास की कलिया चुनते है।
महसूस की खुश्बू से वो
सासों में बस जाते हैं।
जीवन की राहों पाक नही
छल-कपट के मोड़ मिल जाते है।
ये मोड़ गुरु सरीखे है जो
अनुभव का पाठ सिखाते है
प्रतिस्पर्धा के हाय हाय में
बाय बाय सब करते है।
अब आकर्षण की माया में
अपने भी खो जाते है।
अपनो की रंगोली पर
अपनेपन का रंग कैसे भरे।
जब अपने गिरगिट की
रंगत में बेरंग नजर आते है।

वक्त नही

हर खुशी है लोगो के दामन में
पर एक हँसी के लिये वक्त नही,
दिन रात दौड़ती दुनिया मे,
जिन्दगी के लिये ही वक्त नही
सारे रिश्तों को तो हम मार चुके
अब उन्हें दफनाने का भी वक्त नही है.....
सारे नाम मोबाइल में है
पर दोस्ती के लिये वक्त नही है
गयेरो की क्या बात करे,
जब अपनो के लिये ही वक्त नही
आँखो में है नींद भरी,
पर सोने का वक्त नही
दिल है गमो से भरा हुआ
पर रोने का भी वक्त नही
पैसो की दौड़ में ऐसे दौड़े,
की थकने का भी वक्त नही,
पराये एहसानों की क्या कदर करे
जब अपने सपनो के लिये ही वक्त नही
तू ही बता ये जिंदगी
इस जिंदगी का क्या होंगा
की हर पल मरने वालों को
जीने के लिये वक्त नही

सुबह

मैं सुबह छोड़ जाऊंगी तुम्हारे पास।
तुम शाम मेरी सम्हाले रखना,
कुछ सुनना तो कुछ तुम सुनना
रात के ख्वाब से दूर मत जाना....।
दिनों के साथ गर मै गुजर भी जाऊँ
पर हर सांझ को मेरा इंतजार करना,
यादों को दिल मे सजाये रखना,
पलको मे मेरी सीरत बनाये रखना।
कुछ बादल छेड़ेंगे तुम्हे हर सुबह
मुसीबतों में भी हौसला बनाये रखना।
मुस्कुराना और जी भर के जीना,
पर यादों की मुलाकात कराये रखना।
वो सुबह ही क्या जो शुरू हो तुम बिन,
वो रात ही क्या जो ढल जाये तुम बिन,
पर हर लम्हे को लम्हा बनाये रखना।
दूरियों को खुद से दूर हटाय रखना।
आँखो की नमी पलको से छिपाय रखना।
राज गहरे दिल के दिल मे दबाये रखना।
हर रात तस्वीर को सीने से लगाये रखना।
हर सुबह चमकती आँखो में सजाये रखना।
यादों में लिपटा प्यार गर भूल भी जाऊ,
तो झगड़ो में छुपी मोहब्बत बचाये रखना,
मैं सुबह छोड़ जाऊंगी तुम्हारे पास,
तुम शाम मेरी सम्भाले रखना।

गर्व है मुझे

युगों से कायम अपनी संस्कृति पे गर्व है,
गीता के पवित्र श्लोक और कुरानी
पाक आयत पे गर्व है
धर्म, भाषा, रीति, रिवाज तो अनेक है देश मे
फिर भी पूरे देश को जोड़ने वाली
अटूट एकता पर गर्व है
अपनी जगह पे अडिग पर्वतराज
हिमालय पे गर्व है
पानी की धरोहर के मालिक विशाल सागर पर गर्व है
गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा,
कावेरी ने पाला हमे,
नदियों को मैया बुलाने वाली परंपरा पे गर्व है,
जल, थल और आकाश की खोज
रक्षा करती फौज पर गर्व है
सबका पेट भरती किसानों की कड़ी मेहनत पे गर्व है
शिक्षा, साहित्य, उद्योग, विज्ञान
सब कुछ है यहां
हरदम आगे बड़ने वाली भारतीय
सोच पर गर्व है।

पतिदेव

आपसे शुरू हुई है फिर मेरी
कहानी
गुजर आयी जिसमे थी,
गुड्डे गुड़िया दादी नानी
आज आपको कुछ बतलाना है
आज आपको कहते जाना है
आज मेरी आप हर बात सुनोगे,
आज कहि न आप भटकोंगे,
जबसे थामा हाथ आपका है
जगमग जगमग फैला उजियारा है
आपने मुझको इतना मान दिया है
हर पल हर दम ध्यान दिया है
हस देते हो हर भूल पर मेरी,
मुझे मनाने में नही करते देरी,
पढ़ लेते हो आँखो में सपने
अब आप लगते हो सिर्फ आप हो
अपने,
एक बात बताऊ आपको मेरी,
अक्सर करती हूँ घर काम मे देरी,
चाहती हूँ आप हरदम पास रहो
मेरे,
हर पल हर क्षण मुझको घेरे
आपसे है वजूद मेरा,
आपसे रात तमस हर सबेरा
बस इतना चाहती हूँ
ऐसा ही साथ निभाना
जब चाहो जो चाहो कहते जाना
आपसे जीवन को रसधार मिली है
अब जन्मो की हर डोर आपसे
जुड़ी हैं।

ये काश!

ये काश! कभी न बड़े होते
गोदी में तेरे ही रहे होते
दुनियां के थपेड़ों से ये माँ
हर रोज न हम यू लड़े होते
न रोज की उलझने होती
न तोड़ के सपने हम रोते
सपनीली सी इन आँखों मे
गम के बादल न चढ़े होते
ये काश ! सुकून से हम होते
गोदी में तेरी ही रहे होते
दुनियां के थपेड़ों से ते माँ
हर रोज हम यू ही लड़े होते
तड़पाने में जग माहिर है
खुद से ही अब हम रुठ रहे है
ये काश ! न आँसू बहे होते
गोदी में हम तेरे

वृक्ष की नियति

उसने सुने जंगलाती क्षेत्र में
एक पौधा रोपा
और हवाओ से कहा
इसे पनपने देना
जब विशवास का मौसम आएगा
यह विवेक के साथ विकसित होकर.....
अपने पावों पर खड़ा होंगा
एक दिन ये जरूर बड़ा होंगा
फिर उसने मानसुन की गीली
आँखो में हिलती हुई जड़ो
फरफराते पत्ते और
लदी लरजती शाखों के
फलों को दिखाकर कहा
मौसम चाहे कितने भी रूप
बदले यह वृक्ष नही गिरना चाहिये
और यह भी नही गिरना चाहिये
और यह भी नही कोई इसे
समूल काट दे
संबंधों की गंध के नाम पर
बाट दे....
तुम्हे वृक्ष को खड़ा ही रखना है
प्रतिकूल हवाओ में भी
बड़ा ही रखना है
एक अंतराल के बाद
वृक्ष प्रेम पाकर जिया
और उसने बाद की पीढ़ियों को भी पनपने दिया।
वृक्ष और भी लगाए गए
वृक्षरोपण के लिए
सभी के मन मे जगाए गए।
फिर एक दिन ऐसा आया
वृक्ष की शाखों को काट ले
गए लोग ....
पत्तो से जुड़ गए अभाव-अभियोग
एक बूढ़ा वृक्ष गिर खिर गया
युगों युगों का सपना आँखो में पला।

एक मुलाकात भगवान के साथ

एक दिन मिल गए भगवान मुझको..
मैने पूछा ये क्या हुआ तुझको
क्यों मेरे हौसले बढ़ाता है
रोज सपने नये दिखाता है
और फिर उन को तोड़ देता है
ला के रस्ते पे छोड़ देता है
कई रिश्ते बने जो फिर टूटे
कितने ही दोस्त राह में छुटे
दे के सुख हाथ खींच लेता है
कर दुःखी आँख मीच लेता है
क्यो नही मेरा कुछ ख्याल तुझे
हस के भगवान बोले के क्यो
बिगड़ती हो,
मिल गया हूँ तो अब क्यो लड़ती
हो
खुशी थी तब ना किया मुझको याद
गम में करने लगे तुम फरीयाद
इसको तकलीफ अपनी कहती हो
ये तो कुछ भी नही जो सहती हो
जिंदगी के कठिन ये रास्ते है
यहाँ सुख है तो दुःख भी बस्ते है
जो भी इन पर से गुजर जाता है
अपनी मंजिल को वो ही पाता है
परेशानी तो इक बहाना था
तुझ को अपने करीब लाना था
हर एक इंसान को परखना है
मुझ को सबका ख्याल रखना है
सब के दुःख दर्द मैं भी सहता हू
मैं तुम्हारे भी दिल मे रहता हूँ
कभी मुझसे मिलना चाहोंगी
किसी रोते को गर हँसाओगी
कभी छोडूंगा ना साथ तेरा
तेरे सर पे रहेगा हाथ मेरा

श्राद्ध

अपने लिये एक शर्ट ले ली जाय
पिता ने ऐसा विचार किया
फिर बेटे का जन्मदिन याद आया
पिता ने अपनी शर्ट के विचार का
श्राद्ध कर दिया।
सारा दिन खटती माँ की आँखे
नींद से बोझल हो रही थी
तभी उसने बेटे के बुखार को
महसूस किया।
माँ ने फौरन अपनी नींद
का श्राद्ध कर दिया।
फटा हुआ जर्जन बैग पीठ पर लादे
पिता ने नए बैग का स्वपन देखा
फिर बेटे के कहलेज का खर्च याद
आया।
पिता ने अपने नए बैग के स्वप्न
का श्राद्ध कर दिया।
हमेशा पीठ दर्द की शिकायत थी
माँ ने वाशिंग मशीन का ख्वाब देखा।
बेटे के स्मार्ट फोन की जिद देख
माँ ने वाशिंग मशीन के ख्वाब का
श्राद्ध कर दिया।
पिता की चप्पल जर्जन हालत में थी
नए जूते खरीदने का मन बनाया
लेकिन बेटे के स्पोर्ट्स सूज के लिए।
पिता ने अपने जूतों के ख्वाब का
श्राद्ध कर दिया
अब पिता वृद्ध आश्रम में है
और माँ स्वर्गवासी हो चुकी है।
बेटे के भविष्य के लिए
जीवन मे न जाने कितने श्राद्ध
कर दिए।
कुछ साल बाद बेटा माँ बाप का
श्राद्ध कर रहा था।
पिड़ बनाकर पत्तो पर रख रहा
था।
आ-आ कर कौए को बुला
रहा था।
तभी दो कौए वहां पहुँचे
और खुशी खुशी पीड़ खाने लगे
मृत्यू के बाद भी बेटे की खुशी की
खातिर।
दोनों ने आत्मसम्मान का श्राद्ध कर
दिया।

मन

कभी कभी मन
पीछे लौट जाना चाहता है
बदलना चाहता है
कुछ तारीखों पर लिखे सच को
किंतनी हसरते से
रगड़ रगड़ कर
करता है कोशिश बदल दे
तकदीर के लिखे को
पर मन के बस में
कुछ भी नही...
कहा लौट सकता है
खोये हुए को वापस
बदल नही सकता है
ये अबोध मन
तारीखों में दर्ज सच को
ताकता है आसमान में
जहाँ दूर कहि
एक तारा टिमटिमाता है
जो खोया है अपना
वही तो दूर से यू मुस्कुराता है
खोये हुए माँ का प्यार शायद
ऐसे ही लौट कर आता

ब्याह के दो पहलू

कुछ खुशी थी छलक रही उस और...

कुछ गम था सिसक रहा इस और

कही सेज सजी नव जीवन की

कही शाम ढली थी बचपन की

कही सजी थी थाली स्वागत की

कही तैयारी थी आज विदाई की

कही ढोल में बजती खुशी सुनी

तो कही शहनाई में थी व्यथा भरी

कही दूल्हा घोड़ी बारात सजी

कही यज्ञ वेदी मंडप की धधक उठी....

किसी को नई सुबह की जल्दी थी

कही माँ मल रही हाथ पे हल्दी थी

इक दामन थाम शुरुवात फेरो की हुई....

इक दामन से आज भी बेटी छूट रही है

माँ पिता के रग रग में थी जो बसी

आज किसी का बायां अंग बनी

कोई लेकर चला नयी दुल्हन को

पूँजी थी किसी के जीवन की गयी

किसी की लेकर भी बढ़ रही शान थी....

कोई झुककर दे गया था कन्यादान भी...

एक सास ससुर को नई बहु मिली

फिर ससुराल में रौनक करने को आज...

एक बेटी मायके की गलियां सूनी छोड़ चली

कुछ खुशी थी छलक रही उस और

कुछ गम था सिसिक रहा इस और।

विचार

विचारो की विचारधारा का प्रवाह
थमता नही है.....
विचार अपने आप मे एक अंतरिक्ष
ये जमता नही है
कितने भी गरज के बरसे बादल
ये नदी में बहता नही है
विचारो की विचार धारा का प्रवाह
थमता नही है.....
विचारो से निकली किंतनी कहानी,
कल्पनाये
हर शख्स जिंदा है किताब
मे वो मरता नही है
विचारो की विचारधारा का
प्रवाह थमता नही है
विचारो से तैरती है रेगिस्तान
में भी कश्ती
और विचारो सा ही सूखा कोई
समंदर नही है
विचारों की विचारधारा का प्रवाह
थमता नही है
विचारो का इश्क और सौदेबाजी
चाँद सितारों से है
इस इश्क में तन्हा जो जलने दिया
फिर बुझता नही है
विचारो की विचारधारा का प्रवाह
थमता नही है
विचार जा-जाकर बैठते हैं
पर्वतों और पाताल में
तन्हा विचारों सा कोई ऊँचा
और कोई निचा नही है।
विचारो की विचार धारा का
प्रवाह थमता नही है।

मीठी यादे

सुना था कि विद्यालय हमारा दूसरा
घर है
जहाँ इन्सान बहुत कुछ पाता है
नही कुछ खोता है
यह सच है आपसे मिल कर
इसका एहसास
आपके साथ बिताया हुआ
हर लम्हा है हमारे लिये है खास
आपने न केवल जमंबीमत बनकर
बल्कि एक माँ बनकर हमे
सिखाया.....
आपने दुनिया को एक अलग
नजरिये से दिखाया
जुदा जरूर हो गये हम,
पर यादे हमेशा रहेंगी साथ
आपका ये खिलखिलाता चेहरा
वह शाबाशी भरे हाथ
हमेशा याद रहेगी वह तारीफ
करती भीगी मुस्कुराहट
हमारे किताबो में झांकती वह
निगरानी भरी आहट
"Homework" नही किया तो
खड़े हो जाइए
Book नही लाई Class से
बाहर जाइए
कभी जो डाट चुभती थी
आज वह भी लगने लगी प्यारी
आपकी कही हुई बाते
हमेशा याद रहेंगी सारी
शरारत करने पर आपका
वह गुस्से से भरा चेहरा
आप हमारी जिन्दगी में
एक नया सवेरा लेकर आई
जैसे हो पहली बूंद बारिश की
कभी अलविदा न कहना
है हमारी आपसे गुजारिश यही
आप सभी हमारे दिलों में
एक मीठी याद बनकर रहेगी
जिसके बारे में सोचकर
आशु से भरी आँखो के साथ
एक साथ एक दिन
मुस्कुराये हम सभी

बड़ी हो गयी है कितनी

पीठ पे बस्ता टांग के अपना हिला
हाथ
वो स्कूल चली बड़ी हो गयी है अब
कितनी प्यारी वो मेरी नन्ही सी कली
अभी तो आई थी गोदी में,
अभी तो पहला कदम चली
अभी तो बोली थी बस
'मम्मी' अपनी भाषा मे तोतली
चुपचाप चली जाती अब
आँखो में नीद भरे अपनी
दूर वो मुझसे जाते में
अब नही मचलती है उतनी
झिलमिल करती आँखे उसकी
उस पर पलके भी घनी घनी
ओढ़ दुप्पटा मेरा सर पे बोली
मैं दुल्हन हूँ बनी...
आज बनी है खेल खेल में
कल बनेंगी वो दुल्हन असली
यू ही एक दिन आ जायेगा
जब वो छोड़ चलेंगी मेरी गली
देख नही पाऊंगी पल पल
मैं सूरत उसकी...
ये भली टोक नही पाऊँगी
उसको फिर बात-बात पे
घड़ी घड़ी ....
अब तक जो हर काम को
अपने मुझ पर थी
निर्भर वो रही फिर
भूल जायेंगी माँ को वो
रम कर दुनिया मे कही
काश संजो कर रख
पाती हर इस पल
को अपने पास कही यादों
को भर लेती
नैनो में पल पल जो
मुझसे छूट रही
भाग रहा है तेज गति से
वक्त है की रुकता ही नही
ले जायेगा बचपन उसका
मैं रह जाऊँगी यही कही
पीठ पे बस्ता टांग के अपना
हिला हाथ.....

मिठास

चाय का कप लेकर आप
खिड़की के पास बैठे हो
और बाहर के सुंदर नजारे का
आनंद लेते हुए चाय की चुस्की
लेते है....
अरे चीनी डालना तो भूल ही गये
और तभी फिर से किचन में
जाकर....
चीनी डालने का आलस आ गया
आज फीकी चाय को जैसे तैसे
पी गए कप खाली कर दिया
तभी आपकी नजर कप के तल
में पड़ी बिना घुली चीनी पर
पड़ती है....!
मुख पर मुस्कुराहट लिए सोच में
पड़ गये....
चम्मच होता तो मिला लेती

हमारे जीवन मे भी कुछ ऐसा ही
है.....
सुख ही सुख बिखरा पड़ा है
हमारे आस-पास लेकिन
बिन घुली उस चीनी की तरह!!
थोड़ा सा ध्यान दे
किसी के साथ हँसते हँसते उतने
ही....
हम से रूठना भी आना चाहिए।
अपनो की आँख का पानी
धीरे से पोछना आना चाहिए।
रिश्तेदारी और दोस्ती में कैसा
मान अपमान ??
बस अपनो के दिल मे रहना
आना चाहिए.....!!
जीवन मे मिठास घोलनी चाहिए !!

इश्क

तेरे मेरे इश्क की बस इतनी सी
कहानी है।
मिलकर भी हम न मिले
ये ही बात जानी है
मुझको तेरे इश्क की
मिली है ये सौगाते
जाग जाग काटते है
हम क्यों राते
दर्द है अमानत और आँखो में
पानी है....
तेरे मेरे इश्क की बस
इतनी सी कहानी है।
मिलकर भी हम न मिले
ये ही बात जानी है
हूँ खतावार मैं मोहब्बतो
की हक्कदार नही
दिल मे थोड़ा इश्क भी
मेरी सरकार नही
तुमको ही अपनी
मोहब्बत सदा निभानी है
तेरे मेरे इश्क की बस
इतनी सी कहानी है
लाख खवाइशो में ही
गुजरी जिन्दगी मेरी
न रही ख्वाइश कभी
तू बने ख्वाइश मेरी
गुस्ताखियो की आदत मेरी पुरानी
है....
तेरे मेरे इश्क की बस इतनी सी
कहानी है
जाने क्यों सुलगते से रहते है
अरमान कई
तू नही है पर दिल मे उठते
है तूफान कई
अश्को के समंदर में जिंदगी
बीत जानी है...
तेरे मेरे इश्क की बस इतनी
सी कहानी है

शिक्षक

गुरु थे कर्मचारी हो गए है
दाँतो फसे सुपारी हो गए है
महकमा सारा हमको ढूंढता है
हम संकरात्मक बीमारी हो गए है
इसे चमचागिरी की हद की कहिये
कई शिक्षक अधिकारी हो गए है
अब वे अकेले कईयों को नचाते है
और हम टीचर से मदारी हो गए है
उन्हें अब चौक डस्टर से क्या
मतलब।
जो ब्लॉक/संकुल प्रभारी हो गए है..
कमीशन इसमें, उसमे, इसमें भी दो.
हम दे दे कर भिखारी हो गए है।
मिला है MDM का चार्ज जबसे
गुरुजी भी भंडारी हो गए है
B E O ऑफिस को मंदिर समझकर
कई टीचर पुजारी हो गए है
पढ़ाने से जिन्हें मतलब नही है।
वो प्रशिक्षण प्रभारी हो गए है
खटारा बस बनी शिक्षा व्यवस्था
और हम लटकी सवारी ही गये
स्कूलों में पढ़ाने नही दे रही
सरकार।
केवल डाक देने वाले डाकिया हो
गये।
हक की लड़ाई लड़ने पर प्रतिबंध
लगा दिया जाता है
शिक्षक अब गुरु नही रहे
केवल सरकारी गुलाम रह गए।
अब विभाग हमारी निगरानी करेगा।
मानो हम शिक्षक नही
मोस्ट वांटेड अपराधी हो गए।

ख्वाहिशे

ख्वाहिश नही मुझे मशहूर होने की
आप मुझे पहचानते हो बस इतना
काफी है !!
अच्छे ने अच्छा और बुरे ने बुरा
जाना मुझे,
क्यो की जिसकी जितनी जरूरत
थी...
उसने उतना ही पहचाना मुझे।।
जिंदगी का फलसफा तो कितना
अजीब है।
शामें कटती नही और साल
गुजरते चले जा रहे है।
एक अजीब सी दौड़ है
ये जिंदगी
जीत जाओ तो कई अपने
पीछे छूट जाते है
और हार जाओ तो अपने
ही पीछे छोड़ जाते है।
मैने समंदर से सीखा है
जीने का सलीका
चुपचाप से बहना और
अपनी मौज में रहना।
ऐसा नही की मुझमे कोई
एब नही है।
पर सच कहती हूँ
मुझमे कोई फरेब नही है।
जल जाते है मेरे दुश्मन
मेरे अंदाज से क्योंकि
एक मुद्दत से मैने न मोहब्बत
बदली न दोस्त बदले।
एक घड़ी खरीदकर हाथ मे
क्या बांध ली.....
वक्त पीछे ही पड़ गया मेरे....!

दीवानी

ये मेरी जिंदगी के हमसफर,
मेरी धड़कनों की रवानी तुम से है
तेरी हर खुशी से खुशी है मेरी
और आँखो में पानी तुम से है।
मैं पल पल तड़पती हूँ तेरे लिए ही
मेरी ये जिंदगी तुम से है।
मैं हर बात सोचती हूँ तेरे लिये ही
मेरे जज्बात तुमसे है
मेरा नसीब अच्छा नही था
इसलिये आप हम मिल न सके
ये कुदरत की मेहरबानी तुम से है
मैं तेरे ही प्यार में पागल हूँ
मेरी हर अदा दीवानी तुम से है
मेरी हर सुबह तेरे नाम से होती है
मेरी हर शाम दीवानी तुम से है
आप एक उम्र की बात करते हो
भगवान करे मेरे तो हर जन्म
की कहानी तुम से ही हो.....!!

बेटियां

कोई चेहरा है कोमल कली का
रूप कोई सलोनी परी का
इनसे सीखा सबब जिंदगी का
बेटियां तो है लम्हा खुशी का
ये अगर है रोशन जहाँ है
ये जमीन है आसमान है
है वजूद इनसे ही आदमी का
बेटियां तो है लम्हा खुशी का।
हमने रब को तो देखा नही
पर नूर है ये खुदा का जमी पर।
एक एहसास है रोशनी का
बेटियां तो है लम्हा खुशी का
इनसे इनकी अदाए न छीनो
इनसे इनकी सदाए न छीनो।
हक इन्हें भी तो है जिंदगी का
बेटियां तो है लम्हा खुशी का
फिर भी लोगो के नजरिया देखो
जो माँ है वही तो सास है
फिर माँ क्यों अच्छी है
और सास क्यो बुरी है ??
जो बेटी है वही तो बहु है
फिर बेटी क्यों लाडली
और बहु क्यो छुरी है??
बेटी का दुःख ही सीने
को चीरता है
बहु से नजरे क्यो नफरत भरी है?
लोभियों ने बेशक बहु पे तेल
डाला....
पर जब भी जली है बेटियां ही
जली है.....
ये बेटियां तो बाबुल की रानियां है
मीठी मीठी प्यारी प्यारी ये
कहानियां है।
ये चिड़िया एक दिन फूर से
उड़ जाना है।
कोई इनका हाथ न छोड़े
कोई इनका दिल न तोड़े...

अनकही दोस्त

पूछे जो कोई कौन हूँ मैं
कह देना कोई खास नही
एक दोस्त हूँ सीधी साधी सी
जिसमे कोई बात नही
मिल जाती हूं आते जाते
है ऐसी कोई मुलाकात नही
मैं हूँ एक आम सी व्यक्ति
इसकी कोई बिसात नही
न भी मिलू तो चलता है
मिलने की कोई प्यास नही
है ये रिश्ता बहुत छोटा सा
इस रिश्ते की कोई आस नही
बतला देना मुझे बेगाना
कह देना विश्वास नही
हूँ मै राही पल दो पल की
कोई जीवन भर का साथ नही
पूछे कोई तुमसे ..
याद आ जाती हूं कभी कभी
दिल मे होने जैसी याद नही।
चल देती हूँ हर डगर पर साथ
तुम्हारे....
हमसफर जैसा फिर भी कोई
साथ नही।
जब रोती हूँ आँखे पी लेती है
हर आँसू
पर रिश्ते जैसी कोई बात
फिर भी पूछे कोई कौन हूँ मैं
कह देना इसकी कोई जात नही
एक दोस्त हूँ चलती फिरती सी
जिसमे कुछ भी बात नही।

सच्चा साथी

कही देखा है तुमने उसे
जो मुझे सताया करता था
जब भी उदास होती थी मैं
मुझे हसाया करता था
एक प्यार भरा रिश्ता था
वो मेरा.....
जो मुझे अब भी याद आता है
खो गया वक्त के भंवर में कही
जो हर पल मेरे साथ होता था
आज एक अजनबी की तरह
हाथ मिलता है।
जो छोटी छोटी बात मुझे बताया
करता था।
कही मिले वो किसी मोड़ पर
तो उसे मेरा संदेश देना
कोई है जो आज भी उसके लिये
अपनी जान देने को तैयार है।
जिसे कभी वो अपना सच्चा
साथी बोला करता था।

मोल-अनमोल

जीवन की भाग दौड़ में क्यों वक्त
के साथ रंगत खो जाती है?
हँसती -खेलती जिंदगी भी
आम हो जाती है।
एक सबेरा था जब हसकर उठते
थे हम...
और आज कई बार बिना मुस्कुराये
ही शाम हो जाती है।
कितने दूर निकल गए
रिश्तों को निभाते निभाते
खुद को खो दिया हमने
अपनो को पाते पाते।
लोग कहते है हम मुस्कुराते
बहोत है,
और हम थक गए दर्द छुपाते छुपाते
खुश हूँ और सबको खुश रखती हूँ
लापवाह हूँ फिर भी सबकी
परवाह करती हूँ।
मालूम है कोई मोल नही मेरा
फिर भी
कुछ अनमोल लोगो से
रिश्ता रखती हूँ।।

जिन्दगी

ना जाने क्यों अजनबी सी है ये जिन्दगी
एक पल में है कोई, तो दूसरे पल में कोई नही
मैं तो हूँ यहाँ.... पर मेरा मन है और कही
न जाने क्यों अजीब सी है जिन्दगी
हर पल कुछ गवाया तो दूसरे ही पल कुछ नया पाया
कभी कोई रूठा हमसे तो कभी किसीने हमे मनाया
कभी जिन्दगी ने हमे रुलाया तो कभी इसने हमे हसाया
ना जाने क्यों अजीब सी है जिन्दगी
बहुत से रिश्ते दिए ...
इसने माँ की ममता,
पिता का प्यार,दादी की कहानी
तो दादा का दुलार
कभी किसी ने अपनाया तो कभी किसी ने झटके से हाथ छुड़ाया.....
ना जाने क्यों अजीब सी हैं जिन्दगी
कभी जोर से गिराया तो कभी हौसले से ऊपर उठाया
कभी थोड़ा फीका सा तो कभी थोड़ा मीठा सा बनाया
कभी किसी परीक्षा में फेल तो कभी किसी परीक्षा में पास कराया.
पर हर एक परीक्षा से इसने हमे बहुत कुछ सिखाया
भले ही हुए कभी फेल पर हमेशा इसने ज्ञान का सागर बढ़ाया
हर एक परिश्रम से कुछ नया ही सिखाया
ना जाने क्यों अजीब सी हैं जिन्दगी
एक पल में है कोई और दूसरे पल में कोई नहीं

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - **सीमा सुनील काचोरे**

जन्म - १६ मई १६७८

माताजी - प्रेमिला वंजारी

पिताजी - कृष्णरावजी वंजारी

पति - सुनील काचोरे

शिक्षा - हिंदी साहित्य में बी.ए. (सेठ केसरीमल पोरवाल महाविद्यालय)

पता - प्लॉट नम्बर २६, फ्लैट नम्बर १०१, सिधेश सांई विहार, विद्या विहार कॉलोनी, प्रताप नगर, नागपुर, पिन कोड-४४००२२ (महाराष्ट्रा)

मो. - ६४२२२२५०४२

छंद - कविता लिखना

कार्य अनुभव-

मेरी पुस्तक का नाम है 'वक्त'। मै हिंदी साहित्य में एम ए प्रथम श्रेणी तक पड़ी हूँ। इस दौरान में कविता लिखने का प्रयास करती रही। मेरा जन्म १६ मई १६७८ में छोटे से शहर कामठी, नागपुर में हुआ ।मैं सीमा काचोरे, हिंदी साहित्य सम्मेलन, शब्द शुगन्ध संस्था, अभिनंदन मंच, अंतरंग, हिंदी महिला समिति, नागपुर महिला क्लब संस्थाओं से जुड़ी हुई हूँ। मैं १६६६ में सुनील काचोरे से गठबंधित हुई। दो प्यारी-प्यारी गुड़िया हैं मेरी स्वास्तिका काचोरे एवं आर्ची काचोरे की गौरवान्वित माँ हूँ। कामठी के वंजारी परिवार की पुत्री हूँ। काचोरे परिवार की बहु ,भाभी, चाची के सुगम सुंदर सहज प्यारे रिश्तों के साथ अविराम जीवन यात्रा कर रही हूँ।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-065-0
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध